

21

वर्ष : 2017-18

ISSN : 0976-5778

ईसुरी

बुन्देली लोक संस्कार गीतों पर एकाग्र



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित शोध पत्रिका- संख्या : 48672

ईसुरी-21

बुन्देली लोक संस्कार गीतों पर एकाग्र

वर्ष - 2018 ISSN : 0976-5778

प्रधान संपादक

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

संपादक-सचिव, बुन्देली पीठ

राजेन्द्र यादव

सहायक संपादक

विवेकानंद उपाध्याय

मनीष कुमार

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र

उप संपादक

हिमांशु कुमार

अवधेश कुमार



प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर (म.प्र.)

अनुक्रम

प्रधान संपादक की कलम से...	- प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	3
संपादकीय	- डॉ. राजेन्द्र यादव	5

वाचारम्भ

1. बुन्देली लोक संस्कार गीत	- डॉ. राजेन्द्र यादव ✓	9
2. बुन्देली लोक गीतों में शृंगार एवं उपालम्भ	- डॉ. आशुतोष	17
	- डॉ. राजेन्द्र यादव ✓	

संस्कारों की कोठार से

1. बुन्देली संस्कार गीत	- संकलन : बुन्देली पीठ	23
-------------------------	------------------------	----

रचना समय

1. बेटी के विदा पर माँ की सीख	- डॉ. गजाधर सागर	41
2. बिरहन की होरी (गीत)	- डॉ. गजाधर सागर	42

कसौटी

1. बुन्देली लोक संस्कार गीतों की समग्रता	- हरगोविंद 'विश्व'	47
2. बुन्देली गीतों में जन्म एवं विवाह संस्कार	- हरिविष्णु अवस्थी	62
3. बुन्देलखण्ड की वैवाहिक रीतियाँ	- महेश कुमार मिश्र 'मधुकर'	73
4. बुन्देली जन्म-संस्कार गीतों में लोकजीवन	- यशवंत सिंह	79
5. संस्कार गीतों में बुन्देली संस्कृति	- मधुसूदन सिलाकारी	85
6. बुन्देलखण्ड के संस्कार गीत	- डॉ. ओमप्रकाश चौबे	88

बुन्देली लोक गीतों में शृंगार एवं उपालम्भ

डॉ. आशुतोष*

डॉ. राजेन्द्र यादव**

बुन्देली लोक संस्कृति में प्रचलित पारम्परिक लोक शृंगार गीतों में गहरे स्तर पर सौन्दर्यपरक भावों को अभिव्यक्त किया गया है। इन गीतों में नायक नायिका के सौन्दर्य वर्णन के साथ जीवन के बहुआयामी चित्रण को भी व्यक्त किया गया है। उचित वर न मिलने के या अनमेल विवाह के लिए वर ढूँढने वाले पुरोहित और नाई की आलोचना भी इन गीतों में मिलती है। पति-पत्नि के बीच घटित होने वाली घटनाओं तथा सौन्दर्य प्रसंगों को भी बुन्देली लोक गीतों में प्रचुरता से अभिव्यक्त किया गया है। इसमें पति-पत्नि की नोंक-झोंक शृंगार के गीतों में प्रमुख है। मायके और ससुराल के चित्रण भी इन गीतों में मिलते हैं। कृष्ण और राम के चरित्र तथा जीवन को भी बुन्देली लोक संस्कार गीतों में सौन्दर्य दृष्टि से चित्रित किया गया है। मान हट और प्रेम के साथ बिछोह तथा परदेश गमन से उपजी स्मृति को भी इन गीतों में भावनात्मक रूप में अभिव्यक्त किया गया है। बुन्देलखण्ड की कृषि वर्षा पर आधारित होने के कारण वर्षा की अधिकता तथा नमी की चिंता में किसान की मनोदशा शृंगार को गहरे स्तर पर प्रभावित करती है। फसल का अच्छा होना शृंगार को गहरे स्तर पर प्रभावित करती है। फसल का अच्छा होना शृंगार के संयोग पक्ष की मधुरता को बढ़ा देता है तथा फसल

खराब होने पर शृंगार की भावनाओं को इन गीतों में आहत होते हुए भी देखा जा सकता है। बुन्देली लोकगीतों में विप्रलम्भ (वियोग) शृंगार की अनुपम छटा देखने को मिलती है। वृजभाषा और अवधि भाषा की शृंगार परम्परा बुन्देली के शृंगार प्रतीकों में भी स्पष्ट दिखाई देती है। जैसे कोयल, पपीहा, सावन, वर्षा, बादल, झूले आदि शृंगार के प्रतीकों का बुन्देली लोकगीतों में भी प्रयोग मिलता है। प्रेम के संयोग तथा वियोग पक्ष को यह प्रतीक प्रभावित करते हैं। बुन्देली लोक गीतों के शृंगार के प्रतीक भारतीय साहित्य की शृंगार परम्परा में संस्कृत साहित्य के जैसे ही प्रेम की दशाओं में आलम्बन उद्दीपन को अभिव्यक्त करते हैं।

अतः बुन्देली लोक साहित्य के शृंगार प्रतीक किसी भी भारतीय भाषा के शिष्ट साहित्य के समान ही गीतों में शृंगार के दोनों संयोग तथा वियोग पक्ष को दर्शाते हैं। 'ईसुरी' के लोक साहित्य में नायिका के सौन्दर्य वर्णन को उनकी चौकड़िया फाग में देखिये-

“चलतन परत पैजना छमके
पॉवन गौरी धन के।
सुनतन रोम-रोम उठ जावे
धीरज रहत न तन के।
छूटे फिरत गैल खोरन में

*हिन्दी विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003 मोबाइल : 9479398591

**हिन्दी विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003 मोबाइल : 8120071137